

RAMAKRISHNA MISSION VIDYAMANDIRA

(Residential Autonomous College affiliated to University of Calcutta)

B.A./B.Sc. FIRST SEMESTER EXAMINATION, DECEMBER 2019

FIRST YEAR (BATCH 2019-22)

SANSKRIT (Honours)

Paper : I (CC1)

Date : 11/12/2019

Time : 11.00 am – 1.00 pm

Full Marks : 50

१. यथेच्छं द्वयोः निम्नरेखाङ्कितयोः स्थलयोः सकारणं विभक्तिः निर्णयेत। 2 × 1
- (क) (i) बालको भगिन्या अन्तर्धत्ते। (ii) शिक्षकः छात्रम् अभिक्रुध्यति।
(iii) स पादेन खञ्जः। (iv) सूर्ये उदिते पद्मं प्रकाशते।
- (ख) यथेच्छं द्वयोः पदयोः विग्रहवाक्यैः सह समासनामानि लख्यानि। 2 × 1
- (i) दुर्भिक्षम् (ii) वीणापाणिः
(iii) सारदा (iv) अग्रीषोमौ
- (ग) यथेच्छं द्वयोः वाच्यपरिवर्तनं विधेयम्। 2 × 1½
- (i) शिशुः चन्द्रं पश्यति। (ii) राजा दरिद्राय धनं ददाति।
(iii) रामः रावणं बाणेन हतवान्। (iv) माता हसति।
- (घ) यथेच्छं स्थलद्वये सन्धिविच्छेदः कार्यः। 2 × 1
- (i) वस्ताभिः (ii) वनस्पतिः
(iii) कविनापि (iv) नयनम्
- (ङ) यथाभिलाषमधःस्थितेषु द्वयोः परिणतरूपं लेख्यम्। 2 × 1
- (i) गम् + क्त्वा (ii) प्र-वस् + ल्यप्
(iii) यज् + तुमुन् (iv) शास् + क्यप्
- (च) यथेच्छं द्वयोः परस्मैपदविधानकारणं ससूत्रं लेख्यम्। 2 × 1
- (i) अनुकरोति (ii) विरमति
(iii) उपरमति (iv) परिमृष्यति
- (छ) यथेच्छं द्वयोः आत्मनेपदविधानकारणं ससूत्रं लेख्यम्। 2 × 1
- (i) निविशते (ii) अवतिष्ठते
(iii) आस्ते (iv) अवक्रीणीते
२. (क) लक्षणोदाहरणाभ्यां छन्दोद्वयं व्याख्येयम्। 2 × 3
- (i) उपेन्द्रवज्रा (ii) शालिनी
(iii) मालिनी (iv) शिखरिणी
- (ख) यथेच्छं पङ्क्तिद्वयस्य सयुक्तिं छन्दो निर्णयेत। 2 × 2
- (i) अर्थो हि कन्या परकीय एव। (ii) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः।
(iii) मुक्तेषु रश्मिषु निरायतपूर्वकायाः। (iv) पुण्यः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः।
- (ग) यथेच्छमेका टिप्पणी लेख्या। 1 × 5
- (i) वृत्तम् (ii) गणः

৩. সংস্কৃতভাষায়া একস্য অনুবাদঃ কার্যঃ ।

1 × 10

- (i) এক গ্রামে এক দরিদ্র ব্রাহ্মণ বাস করতেন। তাঁর একটি পুত্রসন্তান ছিল। একদিন সেই ব্রাহ্মণ তাঁর যজ্ঞমানের কাছ থেকে ডাক পেলেন। তিনি দান গ্রহণের জন্য যজ্ঞমানের বাড়ি গেলেন। পুত্রের রক্ষার জন্য তিনি বহুদিন ধরে পালিত বেজিটিকে রেখে গেলেন। যখন ব্রাহ্মণ চলে গেলেন, তখন তাঁর পুত্রের কাছে একটি সাপ এলো। বেজি সাপটিকে দেখে তখনই মেরে ফেলল।
- (ii) পৃথিবীতে সকল ভাষার মধ্যে সংস্কৃত ভাষা অন্যতম। এই ভাষাতে সকল শাস্ত্র রচিত হয়েছিল। মহাকাবিগণ এই ভাষার মাধ্যমে অনেক কাব্য, নাটক ইত্যাদি গ্রন্থ রচনা করেছিলেন। ভারতীয় সংস্কৃতির মূল বৈশিষ্ট্য এখানেই নিহিত আছে। এই ভাষার জ্ঞান যথাযথ অর্জন করলে মানুষ পরম শান্তি লাভ করেন, যা অন্য ভাষাগুলোতে নেই। পৃথিবীর সর্বত্র এই ভাষার চর্চা হয়ে থাকে। সংস্কৃত ছাড়া সংস্কৃতি অচল। অতএব সংস্কৃতভাষার রক্ষণাবেক্ষণ অবশ্যই করা উচিত।

৪. যথেষ্টমেকঃ প্রবন্ধো লেখ্যঃ ।

1 × 10

- (i) স্বামী বিবেকানন্দঃ ।
- (ii) চলভাষস্য গুণদোষাঃ ।
- (iii) তব প্রিয় ঋতুঃ ।

_____ x _____